Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

पंजाबी किस्सा गायन 'कविशरी'

Parmjit Kaur

Assistant Professor, Departmet of Music (V), Hindu Kanya College, Kapurthala, Punjab

शोध सार

किसी भी प्रांत की लोक संस्कृति में वहां के लोगों के रहन सहन, उनकी परम्पराएं, रीतिरिवाजों और जीवन स्तर की झलक दिखाई देती है। लोक साहित्य जिसमें भोले भाले गांव वासियों की निश्छलता, स्वछन्दता, हर्षोल्लास की कृत्रिमता रहित उन्मुक्त अभिव्यक्ति दृष्टिगोचर होती है। पंजाब की संस्कृति में आध्यात्मवाद को विस्तार देने में सूफी कवि शेख फरीद, सिक्ख धर्म को नींव प्रदान करने वाले प्रथम गुरु श्री गुरु नानक देव जी और उनके द्वारा स्थापित परम्पराओं का पालन करते अन्य गुरु साहिबान तथा अन्य सूफी कवियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आध्यात्मिक पक्ष के साथ ही ह्रदयस्पर्शी भावनिर्मित स्वर लहरियों से सुसज्जित लोक साहित्य भी पंजाब की अमीर विरासत लोक संगीत के रुप में पनपा। पंजाब के प्राचीन कवियों ने अलग अलग समय काल में काव्य का सृजन किया है। इसी क्रम में प्रीत कथा काव्य के रुप में स्थापित हुई और पंजाबी साहित्य में रोमांटिक साहित्य किस्सा काव्य की नींव रखी गई। जिसके साहित्य में श्रृंगारिकता और वीर रसी काव्य मुख्यतः शामिल है। शोध पत्र के लिए ऐतिहासिक विधि का प्रयोग किया मगा है॥

बीज शब्दः प्रीत कथा, किस्सा काव्य, कविशरी, पंजाबी काव्य, हीर रांझा, वारिस शाह

प्रस्तावना

किसी भी प्रांत का लोक संगीत उसके वहां के रहने वाले लोगों के जीवन स्तर उनकी परम्पराओं, रहन सहन का प्रतिबिम्ब हैं। सुख और दुःख दोनों ही अवस्थाओं में मनुष्य अपने मन में निहित भावों की अभिव्यंजना के लिए लोक संगीत को ढाल के रुप में प्रयोग करता है। जिनमें भोले भाले गांव वासियों की सरलता, स्वछन्दता, हर्षोल्लास की कृत्रिमता रहित उन्मुक्त अभिव्यक्ति है। आडम्बर से रहित मन में उठने वाले उद्‌गारों की सहज अभिव्यक्ति लोक संगीत है।

पंजाब की संस्कृति में अध्यात्मवाद बहुत विस्तृत रुप से प्रफुल्लित हुआ, जहां उच्चकोटि के साहित्य ने जन्म लिया। सूफी कवि शेख फरीद सिक्ख धर्म के बाणी गुरू नानक देव जी से लेकर उनके पश्चात के सिक्ख गुरुओं तक, सूफी साहित्यकार शाह हुसैन, बुल्लेशाह, सुल्तान बाहू आदि का लिखित साहित्य अध्यात्म से ओत प्रोत है। गुरुओं, संतो पीरों की इस पवित्र धरती में अध्यात्मिक पक्ष के साथ ह्रदयस्पर्शी, भावनिर्मित स्वर लहरियों से सुसज्जित लोक साहित्य भी लोक संगीत के रुप में पनपा।

पंजाब में प्राचीन लोक कवियों द्वारा अलग अलग कालों में अनेक काव्य रुपों का सृजन किया। इस क्रम में प्रसिद्ध प्रीत कथा काव्य के रुप में स्थापित हुई और पंजाबी साहित्य में रोमांटिक साहित्य किस्सा काव्य की नींव रखी गई। जिसके साहित्य में श्रृंगारिकता और वीर रसी कहानियाँ मुख्यतः शामिल हैं।

मध्यकालीन पंजाबी काव्य के रुपों में किस्सों का व्याख्यान करने वाले साहित्य में किस्सा काव्य एक विलक्षण रुप है। भारतीय इतिहास पर दृष्टि डालें तो ज्ञात होता है कि प्राचीनकाल से लेकर मध्यकाल तक के कालखण्ड तक

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

आध्यत्म और ईश्वर भक्ति से सम्बन्धित कहानियां, किस्सा काव्य खूब फला फूला, परन्तु धीरे धीरे परम्पराओं से हटकर मनुष्य जीवन में नवीनता के लिए, कुछ नये की खोज में इस शैली का उद्भव हुआ।

किस्सा काव्य मध्यकालीन पंजाबी साहित्य की एक महत्वपूर्ण रचना है। इस काव्य की रचना की सृजनता में भारतीय परम्पराओं के साथ पंजाब का लोक साहित्य भी कार्यशील रहा है। पंजाबी साहित्य पर दृष्टि डालें तो ज्ञात होता है कि इसका सारा इतिहास लोक कथाओं के जीवन स्रोतों पर आधारित है और साहित्य में लोक सृजनशीलता का पुट डालता है। प्रीत कथाएं मुख्य स्रोत रही हैं। हर काल खण्ड में कवियों द्वारा अनेक प्रेम कथाओं को किस्सों के रुप में लिखा है। कहानी सुनाना भारतीय संस्कृति की पुरानी परम्परा रही है। साहित्यिक आवरण पहना इन कहानियों को कविता का रुप प्रदान करने पर यही कहानियां किस्सा कहलाईं

किस्सा शब्द मूलतः अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ कहानी, कथा, वृत्तांत आदि है। डॉ मोहन सिंह दीवाना के अनुसार ''किस्से के अर्थ के रुप में कल्पित या अर्द्ध कल्पी वार्ता से लिया जाता है।''

भाई काहन सिंह नाभा के अनुसार, "किस्सा शब्द का अर्थ कहानी या कथा है। डॉ दीवान सिंह ने किस्सों को अरबी जुबान का शब्द माना है, जिसका अर्थ अफसाना, कहानी, गल्ल, ज़कादित, सरगुज़शत है।

डॉ रतन सिंह जग्गी ने किस्सा उस शैली को माना है जो छंद बद्ध वृत्तांतिक रचना है, जिसमें कथानक का संबंध प्रेम, रोमांस, वीरता, भक्ति, देशप्रेम, धर्म या समाज सुधार से हो।

डॉ कुलबीर सिंह कांग के अनुसार, "पंजाबी काव्य शैली "किस्सा" फारसी भाषा की मसनवी परम्परा का ऋणी है। पंजाब शताब्दियों तक ईरान के अधीन रहा है। यहाँ कई फारसी शायर हुए हैं और फारसी आठ शताब्दियों तक सरकारी भाषा के रुप में प्रयोग होती रही है। फारसी साहित्य की मसनवी परम्परा का भाव पंजाबी किस्साकारी ने ग्रहण किया।

पंजाबी भाषा के लोक कवियों ने अनेक सुन्दर लोक कथाओं को छंद बद्ध रुप में जन्म दिया और गायकों ने इन रोमांस युक्त कथाओं को दिन त्योहारों, शादी, विवाह के अवसरों पर, उत्सवों तथा विशेषतः मनोरंजन के लिए एकत्रित होकर गाने की प्रथा डाली। पंजाब में भी राजस्थान की तरह कुछ जातियां और कबीले ऐसे थे जो जीवन निर्वाह के लिए लोक कथाओं को कविता रुप में बांधकर गायन करते थे और परिवारिक धरोहर बना पीढ़ी दर पीढ़ी गाकर किसानों को खुश करने का उनका मुख्य पेशा बन गया। इन पेशेवर ढाढियों और गायकों ने कुछ किस्सों जैसे हीर रांझा, सस्सी पुन्नू, सोहनी महीवाल आदि को बहुत प्रसिद्धि प्रदान की।

ऐसा माना जाता है कि किस्सों से संबंधित काव्य मुगलकालीन देन है, जो अरबी, फारसी भाषाओं के माध्यम से पंजाबी भाषा में आया होगा। अरबी भाषा के शब्द "कस्स" धातु से बना शब्द "किस्सा" का अर्थ पीछा जाना – पीछा करना, खबर देना अर्थात किसी घटना का वर्णन कविता या कहानी के माध्यम से करना। पंजाबी में किस्सा फारसी काव्य के प्रसिद्ध प्रकार "मसनवी" पर आधारित है। लम्बी कहानियों का वृत्तांत ही फारसी में "मसनवी" कहलाता है, जिस के अन्तर्गत प्रेम, रहस्य और युद्ध विषयों का वर्णन किया जाता है।

इन किस्सों का गायन करने वाले आमतौर पर खानदानी लोक गायक थे। भंड, डूम (मीरासी) और भराईयां आदि जातियों से ही कथा जोड़ने वाले और गायन करने वाले पैदा होते थे।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

"हऊ ढ़ाढ़ी का नीच जात

होर ऊतम जात सदाइद"

– गुरु नानक

इन जातियों को कला वरदान के रुप में प्राप्त थी। फसले पकने के अवसर पर ये कलाकार ढोल 'ढड' सारंगी के माध्यम से किस्से और वारों का (किस्सा शब्द प्रारम्भ होने से पूर्व वार शब्द किस्से के अर्थ के रुप में प्रयोग किया जाता था) गायन शादी विवाह के अवसरों पर उनसे राग रंग करवाने का प्रचलन था। किस्सा के रचनाकार स्वंय ही गायक भी होते थे, लोगों तक अपनी रचना को गाकर पहुंचाते थे। भट्ट लोग ब्रज भाषा में सवैये, चौपाई, दोहे, सोरठे आदि छंदों में रचना करते रहे हैं।

प्रीत कथाओं की रचनाएं दोहों के रुप में रची जाती थी। लोक कथाएं सरल छंदो में लिखी गई हैं। डूम और भराई जातियां मुस्लिमों के भारत आगमन के पश्चात मुस्लिम धर्म में परिवर्तित हो गईं। संगीत इन्हें ईश्वर की तरफ से वरदान के रुप में प्राप्त होने के कारण इनका पेशा बन गया और पीढ़ी दर पीढ़ी सांगीतिक परम्परा को इन्होंने रोजी रोटी का माध्यम बना लिया। जिनके द्वारा विभिन्न किस्सों की रचना भी की गई और उसका गायन भी। कुछ जातियों द्वारा इसे अपनी खानदानी विरासत समझने के कारण कुछ किस्से संग्रहित नहीं हो पाये या योग्य पात्र को नहीं दे पाने के कारण और कलाकार की मृत्यु के साथ ही कब्र मे दफन हो गए।

पंजाबी भाषा में इस शैली को सर्वप्रथम लिखने का श्रेय दामोदर को जाता है। हीर का किस्सा लिख इस परम्परा की शुरुआत हुई। कुछ विद्वानों के अनुसार किस्सा गायन की परम्परा पूर्व से ही चली आ रही है। डॉ मोहन सिंह दीवाना इस मत का समर्थन करते हुए कहते हैं कि ''दामोदर से पूर्व पुश्य कवि द्वारा सस्सी पुन्नू और मुल्ला दाउद के चांद नामे नाम का किस्सा प्राप्त होता है। परन्तु बहुत सारे विद्वान इस मत से एकमत नहीं हैं। उनके अनुसार पंजाबी साहित्य में किस्सा शैली के पहले रचनाकार दामोदर ही हैं, जिन्होंने हीर रांझा किस्सा की रचना की। इसके अतिरिक्त सोहनी महीवाल, सस्सी पुन्नू, मिरजा साहिबां, पूरन भगत, राजा रसालू, रोज जलाली, रूप बसंत आदि पंजाब में प्रचल्लित स्थानक किस्से हैं।

दामोदर जैसे जन कवियों द्वारा इस प्रसिद्ध कथा को काव्य का आवरण पहनाया गया। किस्सा काव्य को सर्वप्रथम लिखने का श्रेय भी दामोदर को ही जाता है। जो अवश्य ही एक अच्छा गायक भी होगा। जिसका अनुसरण बाद के कवियों पीलू और हाफिज बरखुदार आदि ने भी किया।

किस्सा काव्य में मुख्यतः हीर रांझा, सस्सी पुन्नु, सोहनी महिवाल, मिरजा साहिबां कथाओं को शामिल किया है। ये किस्से लोगों के दिलों के करीब थे इन्हें प्रसिद्धि भी प्राप्त हुई। इनमें हीर रांझा सबसे अधिक लिखा गया। मिरजा साहिबा उसके बाद दूसरे स्थान पर आता है। दामोदर द्वारा रचित हीर रांझा के किस्से का एक उदाहरण इस प्रकार है–.

इसमें दामोदर किस्सा के आरम्भ में साहिब (परमात्मा खुदा) की स्तुति करता है।

अव्वल नाम साहिब दा लईए जिस एह जगत उपाइया।

जिमी असमान पलक दुरु सीती कुदरत नाल टिकाइया

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

दोर कमर खुरसैदो सीते के हर जा इक साइया।

नाओ दामोदर जात गुलाटी जै इह किस्सा चाइआ"

यह मंगला चरण साहिब का है हिन्दुओं और मुसलमानों दोनो के ईष्ट के लिए साहिब शब्द का प्रयोग किया है, आगे लिखते हैं

"दो वरिआँ दी छोहर होई, ढुक रहीआं कुड़माईआं

चोंह वरिआं दी छोहर होई, गल्लां करे सचाईआं

छेहां वरिआं दी छोहर होई, तां दर–दर कूका पाईआं

दसां वरिआं दी छोहर होई, चारे नई निवाईआं

बारां वरिआं दी छोहर होई, तां रांझे अखीआँ लाईआं"

मंगलाचरण इस शैली की प्रस्तुति में बहुत महत्वपूर्ण है। मंगला चरण के माध्यम से कवि अपने इष्ट की आराधना करता है। किशन सिंह गुप्ता लिखते हैं कि ''कवि मंगलाचरण के माध्यम से अपनी रचना की संपूर्णता की प्रार्थना करता है।''

लोक साहित्य में इस शैली को स्थान मिलने के पश्चात इसका विस्तार मुगल काल से लेकर ब्रिटिश काल के आरम्भ तक के समय तक बहुत हुआ और यह समय इस साहित्य का स्वर्णिम काल रहा। मुगल काल में लम्बे लम्बे किस्सों का स्थान धीरे धीरे छोटी कविताओं ने ले लिया।

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से लेकर बीसवीं शताब्दी के पहले चार दशकों तक यह शैली अपनी उच्चता पर थी। 1947 में देश के विभाजन के साथ ही इसका भी पतन प्रारम्भ हो गया। पंजाब के लोकसंगीत में प्रचलित अलग–अलग शैलियों की अपनी विशेषता है। जिसके अन्तर्गत विभिन्न अवसरों जैसे शादी–विवाह, ऋतु गीत, बोलियों, त्योहारों उत्सवों, मेले आदि से सम्बन्धित गीत आते हैं और पुरातन परम्परागत लोक संगीत के प्रकार में किस्सा गायकी का अपना स्थान है। पूर्व में यह केवल काव्य की रचना तक ही सीमित थी जिसका मुख्य विषय प्रेम कथाएं यथा हीर रांझा, सोहनी महिवाल, सस्सी पुन्नु, मिरजा साहिबां, पूरन भगत, युसूफ जुलैखा आदि, परन्तु समय के साथ इन्हें संगीत की स्वर लहरियां से सुसज्जित कर प्रस्तुत किया जाने लगा। इन प्रेम कथाओं के गायन में शास्त्रीय रागों की स्वर संगतियां और लयबद्धता स्पष्ट रुप से परिलक्षित होती है।

डॉ गुरनाम सिंह के अनुसार, "पंजाबी किस्सा गायकी पंजाबी लोक संगीत की गायन सामग्री में शताब्दियों से चली आ रही परम्परा है और ये गायकी पंजाबियों की कई पीढ़ियों द्वारा तराशे संवारे जाने के बाद ही समाज तक पहुँची है।"

पंजाबी लोक संगीत में किसी कहानी को संगीतबद्ध कर गायन करने पर वह किस्सा गायकी कहलाती है "किस्सा" अर्थात वृत्तांत, कथा, कहानी। जिसमें लेखक नायक, नायिका, सुन्दरता, स्वभाव, पहनावा, दृश्य आदि का वर्णन बढ़ा चढ़ा कर करता है। वारिस शाह द्वारा रचित वृत्तांत कला की उच्चता को दर्शाता है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

चिड़ी चूकदी नाल उठ तुरे पांधी,

पईयां दुध दे विच मधानियां ने।

उठ नावणे वास्ते जुआन दोड़े

सेजां जिहनां ने रात नू माणिया ने।

हीर वारिस

पंजाबी लोकसंगीत की इस शैली में छन्द बहुत महत्वपूर्ण हैं, हीर रांझा की रचना में दवईया छंद का प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त बैंत छंद के अन्तर्गत हाफिज ने सस्सी पुन्नु, मिरजा साहिबां, यूसुफ जुलैखा, अहमद गुज्जर, मुकबल और वारिस शाह ने हीर रांझा, पीलू ने मिर्जा साहिबा किस्से को सद्द छंद में लिखा। जिसकी रचना के बंदो में चार तुकों का प्रयोग किया है। कादरयार का किस्सा पूरन भगत जो कि सीहरफी काव्य के अन्तर्गत बैंत छन्द में रचित है। फजल शाह की महत्वपूर्ण रचना सोहनी महिवाल भी इसी छंद में रचित है।

कविशरी

कविशरी गायन शैली पंजाबी लोक साहित्य की प्रचलित शैली जिसका क्षेत्र पंजाब का मालवा अंग रहा है। गेय युक्त काव्य का यह रुप उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में बहुत प्रफुल्लित हुआ और बीसवीं शताब्दी के पहले चार दशकों में यह शैली अपने शिखर पर थी।

कविशरी शब्द की उत्पत्ति कविशर शब्द से हुई। कवि और ईश्वर के संयोजन से बना यह शब्द जिसका अर्थ है श्रेष्ठ कवि। कविशरी शब्द को केसर सिंह छिब्बर ने बंसावलीनामा दसां पातशाहियां का (रचित 1769 ई.) को इस प्रकार प्रयोग किया है –

"मिहरबान पुत्त प्रिथीय दा कबीसरी करे"

कविशरी मुख्यतः छंदों पर आधारित काव्य रचना है जिसका गायन बिना वाद्यों की संगत द्वारा किया जाता है। इसकी पृष्ठभूमि पर दृष्टि डालें तो ज्ञात होता है कि इसका संबंध ढ़ाढी परम्परा से रहा है। ढ़ाढियों का समाज, राज दरबार, श्रोतागण, साहित्य भाषा, उस्ताद शार्गिद, विषय अनुभूति आदि के साथ जो अर्न्तसम्बन्ध है वही कविशर का भी है। कविशरी में साधारण लोगों के मनोभावों की अभिव्यंजना का वर्णन मिलता है। कविशर के तीन प्रकार हैं –

1) कवि या किस्साकार

2) कवीशर

3) गायक

प्रथम श्रेणी में वह कविशर आते हैं जो साहित्य की रचना करते हैं लेकिन स्वंय उसका गायन नहीं करते, द्वितीय के अन्तर्गत काव्य रचना के साथ उसका गायन करने वाले कविशर आते हैं तथा तृतीय श्रेणी उन कविशरों की है जो अपने गुरु की रचित रचनाओं का गायन करते हैं।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

कविशर एक ही समय में गायक व्याख्याकार, वक्ता, फिलबंदीह छंद कहने वाले, पिंगल प्रबीन, उस्ताद, साधु दरवेश या आरिफ हो सकता है इसीलिए वह कवि. ईश्वर है।

इसके साहित्य पर दृष्टि डालें तो मुख्यतः पंजाब का मालवा क्षेत्र जिसके अन्तर्गत बठिंडा, फरीदकोट संगरुर, फाजिल्का आदि शहर शामिल हैं। वहाँ की संस्कृति, रीति रिवाजों, रहन–सहन, लोक वार्ता, लोक विश्वास, ऐतिहासिक प्रसंग, मिथ्यात्मक कथाएं, स्थानीय युद्ध, आभूषण, वस्त्र, पशु, बर्तन आदि विषयों की तस्वीर दिखाई पड़ती है। यहां तक की इस क्षेत्र में आयोजित मेलों से सम्बन्धित किस्से भी प्राप्त होते हैं। वर्तमान कविशरी साहित्य में सिक्खों के वीर रसी युद्ध भूमि से सम्बन्धित प्रसंगो को भी काव्य बद्ध किया है।

मालवा क्षेत्र की इस शैली पर पकड़ होने के कारण इसने अनगिनत कविशर दिए हैं। भगवान सिंह, जोग सिंह, साधू सदा राम, दौलत राम, राणा सिंह, बाबू रजब अली, दया सिंह आरिफ, पं. किशोर चन्द आदि। कविशरी पंजाबी वृत्तांतिक काव्य की एक महत्वपूर्ण शैली है, जिसमें लौकिकता के साथ–साथ विलक्षणता भी है और निहित साहित्य वहां के जनमानस की सामाजिक धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन की प्रस्तुति है।

"किस्सा काव्य" की पूरक यह शैली जिसमें किस्सा काव्य जैसी रचनाओं को "चिटठा" रुप में जाना गया है। जिसके अन्तर्गत समाज में लोगों के बीच रह रहे नायक, साधु सन्त, वीर योद्धा, प्रेमी और दयालु प्रवृति के लोगों के व्यक्तित्व की विशेषताओं का वर्णन किया जाता है। इसके प्रस्तुतिकरण का शुद्ध उद्देश्य जन मानस का मनोरंजन है, अन्य विषयों के रुप में मनुष्य कामनाओं, मानवीय संवेदनाओं, समाज में व्याप्त भ्रम, रीति रिवाज, उत्सव, मेले, त्यौहारों, नैतिकता के साथ धार्मिक अनुशासन का भी चित्रण प्राप्त होता है। प्रेम कथाओं में हीरा रांझा, मिरजा साहिबां, सोहनी महिवाल आदि का गायन इस शैली का मुख्य अंग रहा है। इसके साथ ही स्थानीय प्रीत कथाओं को भी काव्य बद्ध किया है जैसे काका प्रतापी, करतारी – जमीता, रतनी सुनियारी, बेगोनार आदि, इन कविशरी गायकों ने अप्रचलित पुरातन प्रीत कथाओं को अपनी काव्य वस्तु बनाया है जैसे सोरठ बीजा, रोज जलाली आदि

वीररस भरपूर साहित्य के अन्तर्गत वार गायन शैली की तरह बड़े बड़े युद्धों को लड़ने वाले योद्धाओं की वीर गाथाओं का वर्णन और साथ में स्थानीय और छोटे स्तर के वीरों की गाथाओं जैसे दुल्ला भट्टी, जैमल फत्ता, सुच्चा सिंह सूरमा आदि का वर्णन प्राप्त होता है। जिसका उद्देश्य उनकी वीरताओं से भरपूर कार्यों को जनमानस को गाकर अवगत करवाना। प्रेम वीरता के अतिरिक्त धार्मिक प्रसंगो जैसे ध्रुव प्रहलाद, सती सलोचना, नल दमयन्ती, लव–कुश, सीता स्वयंवर का भी वर्णन कवीशरी के साहित्य में प्राप्त होता है।

इन कथाओं के गायन को छंद बद्ध करके गाया जाता है, और कुछ हिस्सों को वार्ता रुप में प्रस्तुत किया जाता है जहां स्वरों की कलात्मकता आवश्यक नहीं है। इन किस्सों कथाओं की रचनाएं सांगीतिक आधार पर की गई हैं जो इस शैली की विशेषता है। सांगीतिक रचनाओं का प्रभाव जन मानस के दिलों दिमाग पर विशेष छाप छोड़ता है। यही कारण है कि प्रचलित कथाएं हीर रांझा, मिर्जा साहिबा आदि का संगीतात्मक प्रस्तुतिकरण आज भी प्रभावशाली है और जनमानस में प्रचलित है। किस्सों को पढ़ने सुनने के स्थान पर इसके गायकी रुप में आनंद प्राप्त करने का प्रचलन उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

कुछ मत ये भी कहते है कि कविशरी का प्रारम्भ सिक्खों के दसवें गुरू श्री गुरु गोबिंद सिंह द्वारा हुआ। युद्ध के समय में योद्धाओं में उत्साह पैदा करने के लिए वीर रस से ओत–प्रोत इस शैली का प्रयोग किया गया। कविशरी के काव्य के छंदो में मुख्यतः वीररस, शान्त रस, विरह और हास्य रस की प्रधानता रही है। बुलन्द आवाज की इस गायन शैली का मूल स्वरुप भट्टों के आगमन से भी आरम्भ माना जाता है। कविशरी भट्ट प्रथा का सहज विकास है जो सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों के कारण उत्पन्न नये संकल्पों, बोधों और धारणाओं का फल है।

साहित कोश में डॉ रतन सिंह जग्गी इस मत की पुष्टि करते हुए लिखते हैं कि, "कविशरी पिंगल के अनुसार यह छंद बद्ध शायरी बिना वाद्यों की शैली है, जिसकी पृष्ठभूमि ढ़ाढी परम्परा से मिलती है कई विद्वान इसे भट्ट परम्परा का परिवर्तित रुप मानते हैं।"

कविशरी प्रस्तुतिकरण का रुप

मेले, त्योहारों, शादी विवाह और सामाजिक समारोहों पर गांव के खुले प्रांगण में जिसे पंजाबी भाषा में "सथ" बोला जाता है वहां खुला अखाड़ा लगा कविशर घूम घूम कर अपनी गायकी की प्रस्तुति देता है। प्रसिद्ध कविशरी गायक बाबू रजब अली अखाड़ा के लिए 'कचहरी' शब्द का प्रयोग करते थे। प्रारम्भ में श्रोताओं की संख्या कम होती थी लेकिन बीसवीं शताब्दी आते आते कविशरी परम्परा साधारण लोगों के मनोरंजन का साधन बनने लगी। प्रस्तुतिकरण के समय सब एक गोलाकार घेरे में बैठते थे, बीच का हिस्सा खाली रखा जाता था जहां कविशर घूम घूम कर कविशरी का गायन करते थे। ताकि श्रोताओं तक पूरी आवाज पहुँच सके। प्रारम्भ में एकल गायन किया जाता था और धीरे धीरे समय परिवर्तन के साथ एकल के स्थान पर सामूहिक गायन करने की परम्परा स्थापित हो गई। जिसके अन्तर्गत मुख्य वक्ता विषय अनुरुप प्रसंग की व्याख्या करता है और दूसरे साथी गायन के द्वारा साथ देते हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी में इस शैली के आरम्भिक काल में जन रुचि अधिक नहीं थी इसलिए इसकी प्रस्तुति के समय एक छोटा घेरा बना और कविशर चारपाई पर बैठ कर ही अपनी गायकी का प्रदर्शन करता था, श्रोता उसके समक्ष जमीन पर ही बैठ जाते थे। समय के साथ–साथ इस शैली ने लोगों के मन में स्थान बनाना प्रारम्भ कर दिया और श्रोताओं द्वारा इसे अपना लिया गया। आवागमन के साधनों का भी प्रयोग होने से इस शैली के प्रचार प्रसार को विस्तार मिला अस्तु श्रोताओं के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचना भी सुगम हो गया।

श्रोताओं की स्वीकृति से कविशरों की भी प्रस्तुति का ढंग बदलने लगा, बैठक के स्थान पर खड़े होकर प्रस्तुति दी जाने लगी। हर मेले, त्योहारों, खुशी ग़मी के अवसरों पर कविशरों के अखाड़े लगने लगे। विशेष अवसरों के अतिरिक्त साधारण दिनों में भी कविशर गांव गांव जाकर कई कई दिन अखाड़ों में प्रस्तुति देते थे। मुख्यतः रात के समय में लगने वाले अखाड़ों में लोग अपनी रोजमर्रा की व्यस्तताओं से निवृत्त हो गांव की उस जगह पर इक्ट्ठे हो जाते थे इस प्रकार अखाड़ा भर जाने पर कविशरी का गायन आरम्भ होता था और देर रात तक चलता रहता था ।

प्रारम्भ में इस गायकी के मुख्य विषय के अन्तर्गत प्रीत कथाओं हीर रांझा, मिर्जा साहिबां, सोहनी माहीवाल, आदि किस्सों का गायन किया जाता था, धीरे धीरे कालप्निक कहानियों को शामिल कर लिया. इस शैली के आरम्भिक

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

काल में केवल गायन ही मुख्य होता था लेकिन शैली को और प्रभावशाली बनाने के लिए इसमें कथा की परम्परा शुरू हो गई। वर्तमान कविशरी का यही रुप प्रचलन में है, विषय की व्याख्या के रुप में सम्बन्धित विषय की कथा तत्पश्चात उसे विस्तार देने के लिए गायन किया जाता है।

बाबू रजब अली इस शैली के प्रमुख कविशरों में जाने गए हैं जिनके द्वारा दर्जन भर के करीब किस्सों और कविताओं की रचना की गई है, जिसका विषय हिन्दु पौराणिक कथाओं जैसे रामायण, पूरन भगत, मुस्लिम नायकों में मोहम्मद, हसन, हुसैन, ऐतिहासिक विषयों पर तथा सिक्ख इतिहास से सम्बन्धित काव्य जैसे शहीद भगत सिंह, गुरू अर्जुन देव जी, साका सरहिन्द, साका चमकौर आदि रहा है। । छन्द बद्ध कवीशरी उनकी गायकी की विशेषता थी। छन्दों में बहतर कला छन्द पंजाबी साहित्य को उनकी देन है।

बाबू रजब अली के अतिरिक्त बापू बली सिंह पंजाब के माझा क्षेत्र में इस शैली के पिता के रुप में जाने जाते हैं, जोगा सिंह, जोगी भाई मागी सिंह गिल, वर्तमान में महल सिंह आदि प्रमुख कविशर हैं जिनके माध्यम से कविशरी ने बहुत विस्तार पाया है।

हास्य रस, करुण और श्रृंगार रस का भाव इस शैली की रचनाओं में निहित रहता है और वर्तमान में वीर रसी काव्य का प्रचलन भी प्रमुखता से हो रहा है। वीर रस से निहित काव्य में सिक्ख गुरुओं की बहादुरी उनके जीवन चरित्र का गायन, युद्ध भूमि में दिखाए साहस का वृत्तांत रहता है। जिसमें वाद्यों की अनुपस्थिति में भी लय दृष्टि गोचर होती रहती है। साधारण गायकी के स्थान पर छंदबद्ध गायकी की जाने लगी है, नवीनता स्वरुप अलग अलग छंदों का प्रयोग श्रोताओं के मनोरंजन के लिए किया जाने लगा।

परिणाम

किसी भी प्रांत का लोक संगीत और लोक साहित्य तभी तक जीवित रह सकता है जब तक वहां के निवासी अपनी सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखने के लिए प्रयासरत रहेंगे। किस्सा गायन शैली मध्यकाल की बहुप्रचलित गायन शैली रही है, जिसका विकास उन्नीसवीं शताब्दी तक भरपूर रहा है और साहित्य के रुप में प्रेम कथाएं मुख्य रहीं है एवं समय के साथ वीररस युक्त काव्य जैसे योद्धाओं द्वारा युद्ध क्षेत्र में वीर कार्यों की गाथाओं का गायन भी इसके साहित्य में शामिल हो गया।

मध्यकालीन किस्सा गायन शैली नेही आधुनिक काल में कविशरी रुप को धारण किया। दोनों के ही गायन का विषय कहानी, कथा और वृतांत रहा है। संगीत और साहित्य की सुन्दर कृति इस बात की ओर इंगित करती है कि दोनों ही एक दूसरे के पूरक रहे हैं। ग्रन्थों में निहित कहानियों कथाओं, का क्षेत्र सीमित हो जाता यदि इसका गायन रुप ना होता। साहित्य की समझ न रखने वाले श्रोता भी संगीत के माध्यम से इसका आन्नद उठाते रहे हैं।

समय के साथ कहानियों, कथाओं की विष्य वस्तु में परिवर्तन होता रहा है परन्तु शैली का मूल सिद्धान्त नहीं बदला। आज यह शैली पतन की ओर अग्रसर है इसका मुख्य कारण इसकी पहचान का क्षेत्र सीमित होना, दूसरा कारण लयबद्ध गायन होने के बाद भी ताल वाद्यों का प्रयोग वर्ज्य है। ताल वाद्यों का प्रयोग किसी भी शैली में रस का संचार दुगुना कर देता है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

निष्कर्ष

अंत में वर्तमान में इस शैली की स्थिति पर दृष्टि डालें तो ज्ञात होगा कि शहरी क्षेत्र इस कला से बहुत परिचित नहीं है। गांवों के मेले, त्योहारों, धार्मिक समागमों में आज भी इस शैली की प्रस्तुति दी जाती है। परन्तु शहरी लोग इस शैली से अनमिज्ञ ही है। आधुनिक काल में तकनीकी के विकास से इस शैली ने गांवो की दहलीज को पार किया, कुछ नये गायकों द्वारा तकनीकी का प्रयोग करते हुए इन्टरनेट के माध्यम से इस शैली को पहचान देने का प्रयास किया जा रहा है और दूसरी तरफ पंजाब के विश्वविद्यालयों में कुछ वर्षों से इस लोक शैली को युवा समारोहों में प्रतियोगिता के माध्यम से जीवित रखने का प्रयास किया जा रहा है। जो इस उम्मीद को जागृत करने में सक्षम हो रहा कि इस शैली को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर योग्य स्थान प्राप्त होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

कांग, कुलबीर सिंह, (2005) पंजाबी किस्सा काव का इतिहास, पंजाबी अकादमी, दिल्ली
पंजाबी साहित दा इतिहास – भाग पहला (1850 ई. तक) (1971) भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला
गुप्ता, किशन सिंह, पंजाबी किस्सा काव विच संस्कृति चेतना, वारिस शाह फाउण्डेशन अमृतसर
पेन्टल, (डॉ) गीता (2011), पंजाब की संगीत परम्परा राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
पदम, पियारा सिंह (1977), हीर, वारिस शाह, नवयुग पब्लिशर्स, नई दिल्ली
सिंह (प्रो.) ब्रह्म जगदीश (2013), मध्यकालीन पंजाबी साहित वारिस शाह फाउण्डेशन , अमृतसर
जग्गी, (डॉ) रतन सिंह (2001), साहित कोष, परिभाषिक शब्दावली, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला
जग्गी, (डॉ) रतन सिंह (2016), पंजाबी साहित दा इतिहास भाग दूजा (1701.1900), पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी–यूनिवर्सिटी, पटियाला
अमृत कीर्तन अंक फरवरी 2020 अमृत कीर्तन ट्रस्ट, चंडीगढ़
दीवान, (डॉ) मोहन सिंह (2014), पंजाबी लिटरेचर का इतिहास (1100–1932), पब्लिकेशन ब्युरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला